By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-1

Topic-Scope of Political Theory

Degree-I (Sub.)

Date-21-01-2022

By Rahul Kumar Jha.

राजनीतिक सिद्धांत के प्रकृति, क्षेत्र और महत्व :-

यद्यपि राजनीतिक सिद्धांतों का मुख्य विषय राज्य है तथापि राजनीतिक चिंतन के इतिहास के विभिन्न चरणों में राज्य से संबंधित अलग-अलग विषय महत्वपूर्ण रहे हैं। प्लेटोवादी राजनीतिक सिद्धांतों का मुख्य विषय 'एक आदर्श राजनीतिक व्यवस्था' की खोज था। अन्य ने राजनीति के मूल सिद्धांतों के विश्लेषण और निर्माण में जुटे रहे, जैसे राज्य की प्रकृति और उद्देश्य, राजनीतिक सत्ता के आधार, राजनीतिक आज्ञापालन की समस्या, राजनीतिक आज्ञा आदि। इनका संकेन्द्र 'राज्य कैसा होना चाहिए' और 'एक आदर्श राज्य की

स्थापना जैसे विषयों से अभिन्न रहा।

औद्योगिक क्रांति और आधुनिक राष्ट्र-राज्य के निर्माण ने एक नये समाज, नयी अभिलाषा और राज्य के नये स्वरूप को जन्म दिया। आधुनिक सिद्धांतों का आरंभ व्यक्तिवाद से होता है जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता और इसकी सुरक्षा राजनीति का सार माने गये। परिणामस्वरूप, आधुनिक राजनीतिक सिद्धांतों में अधिकार, स्वतंत्रता, समानता, सम्पत्ति, न्याय, प्रजातंत्र, जन सहभागिता, राज्य और व्यक्ति में संबंध आदि विषय प्रमुख हो गये। इस संदर्भ में विभिन्न अवधारणाओं के संबंध, जैसे स्वतंत्रता और समानता, न्याय और समानता तथा सम्पत्ति पर भी व्यक्त किया गया।

बीसवीं शताब्दी में राजनीतिक सिद्धांतों को राज्य, सरकार और सरकार की संस्थाओं तथा राजनीतिक प्रक्रिया का अध्ययन माना गया। इस संदर्भ में राज्य

का एक कानूनी ढांचा के रूप में संविधान, संविधान, सरकार तथा सरकार के विभिन्न रूप और कार्य, लोक प्रशासन, राजनीतिक प्रक्रिया, राजनीतिक दल-व्यवस्था तथा राजनीतिक व्यवहार, जन सहभागिता, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति जैसे विषय राजनीतिक सिद्धांतों का विषय क्षेत्र माने जाते।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी राजनीतिक व्यवहार पर आधारित आनुभविक वैज्ञानिक सिद्धांत काफी लोकप्रिय हुआ। इस सिद्धांत ने अन्य सामाजिक विज्ञानों से प्रेरणा लेकर कई नई राजनीतिक अवधारणाओं की रचना की जैसे शक्ति, सत्ता, विशिष्ट-वर्ग समूह, राजनीतिक व्यवस्था, राजनीतिक समाजीकरण राजनीतिक संस्कृति आदि। इन अवधारणाओं को भी राजनीतिक सिद्धांतों का अभिन्न अंग माना जाता है।

CHAPTER CONTINUES....